1764. = Kam. Nitis. 13,61 in folgender Ordnung: c. b. a. d. Am Ende मङ्गिपत:

1767. d. नालिकादिभिः (= सामादिभिः) Comm.

1769. BHARTR. 1,36 lith. Ausg. III. c. पाटली st. मालिका.

1771. Внавтв. 2,71 lith. Ausg. III (b. प्रकार किरोति). Каунтамятак. 23 (b. द्रायं च गूरुयति. c. Zwei Mal जङ्गाति st. ज॰ द॰). Рвазайсави. 13,6 (с. वित्त d. i. वित्तं st. काल्).

1773. Vgl. Spruch 3526.

1774. Auch MBn. 13,2497. c. पुत्राग्च स्वाविरे भावे.

1785. Вилктя. 3,22 lith. Ausg. III (а. पालों कपालो. а. तुल्येषु st. कुल्येषु). Çлтакâv. 97 (а. सिटपटच्केट्रपालों).

1795. Vgl. Spruch 4551.

1801. Çатака́v. 12. а. प्रासीद्रमाकं. ь. ग्रङ्मपि ङ्ता सा प्रियतमा.

1809. = Ка́м. 57 bei Weber (а. पुस्तकस्थापि या. b. पर्क्स्ते च यहनम्. с. समापन्ने st. समुत्पन्ने; in einer Hdschr. lauten с. d: कार्यकाले न चेत्पूर्ण न विद्या न च तहनम्). Vродна-Ка́м. 16,20 und Раззайсавн. 8,6 (а. पुस्तकेषु च या. b. पर्क्स्तेषु यहनम्; in der einen Ausg. von Уродна-Ка́м. च noch zwischengeschoben. с. उत्पन्नेषु च कार्यपु).

1810. Vgl. Spruch 4562.

1814. Çатака́v. 29. a. সাহাা:.

1822. = Кауітамқтак. 100.

1823. c. विधि ist hier wohl durch Schöpfer zu übersetzen.

1827. Johnson übersetzt: Prakriti although great, when forsaken by her lord survives not.

1828. d. तनाशे उन्यत्सद्सत् (wie Çînig. Padon.) Comm. zu Kîm. Nîrîs., mit folgender Erklärung: तनाशे रृत्तणाभावे म्रन्यत् वर्धनं सद्पि विद्यमानमपि म्रसत् म्रशोभनं निर्यकृत्वात्.

1832. Auch Çuk. ed. Bomb. S. 14. a. संताप. c. d. राज्ञां कुलच्चियं प्राणान्द्रम्धैय विः. 1836. Вилктя. 1,30 lith. Ausg. III (d. स्वारालापा oder स्वारालापा). Сатака́v. 63 (b. मधुरभणिता).

1849. = MBH. 13,5572.

1856. = Prasañgabri. 5,6. a. इत्तं तायम् st. तायं पीतम्, पिबत्तः st. स्मर्तः क सलि-लम् st. उद्कम्, म्राजीवनात्तं.

1857. = Kan. 13 bei Weber. Vgl. Spruch 3604.

1858. = Удовил- Ках. 13,11. а. द्व्यमानाः मुतीन्नेण. с. а. गत्तुं तता.

1863. = Vвронл-Ка́р. 6,16. а. प्रभूतं कार्यमल्यं वा. с. मर्वार्म्भेण (so ist bei uns zu lesen) तत्कार्य. а. प्रचत्ते st. प्रकीर्तितम्.